Bundelkhand Journal of Academic Research

भारत–चीन द्विपक्षीय व्यापारिक संबंधों का एक अध्ययन

मुकेश कुमार[1], पवन कुमार सिंह[2]

1. **असि0 प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग,** गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्वी, चित्रकूट।
2. **असि0 प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग**, सावित्री बाई फुले राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय चकिया, चंदौली।

(**Corresponding Author:** mukeshkumaralld@gmail.com)

https://doi.org/10.5281/zenodo.21316837

सारांश

भारत और चीन दुनिया की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से हैं, जिनके बीच परस्पर क्रिया और संबंधों का लंबा इतिहास रहा है। ये दुनियां की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्थाएँ हैं। उदारीकरण कें बाद दोनों ने तेजी से प्रगति की है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और अर्थव्यवस्था की प्रमुख घटनाओं में से एक हाल ही में द्विपक्षीय व्यापार में हुई तेज वृद्धि है। भारत, चीन के शीर्ष दस व्यापारिक साझेदारों में से एक के रूप में उभरा है, जबकि चीन, भारत के शीर्ष तीन व्यापारिक साझेदारों में से एक के रूप में उभरा है। अर्थव्यवस्थाओं के बड़े आकार एवं निर्यातों की संरचना के साथ–साथ उच्च विकास दर और दोनों पक्षों की राजनीतिक इच्छाशक्ति के कारण, द्विपक्षीय व्यापार बढ़ेगा, वैश्विक व्यापार एवं अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा। यद्यपि व्यापार की मात्रा में तेजी से वृद्धि हुई है, लेकिन इसने भारत को किसी भी देश के साथ अब तक के सबसे बड़े एकल व्यापार घाटे में भी धकेल दिया है। हमारी व्यापार घाटे की चिंताएँ दोतरफा हैं। एक तो घाटे का वास्तविक आकार और दूसरायह असंतुलन साल–दर–साल लगातार बढ़ता जा रहा है वाणिज्य मंत्रालय द्वारा जारी विस्तृत व्यापार आंकड़ों के अनुसार, भारत ने 2024–25 में चीन को 14.25 अरब डॉलर मूल्य का माल निर्यात किया, जो पिछले वित्त वर्ष (2023–24) के 16.66 अरब डॉलर मूल्य के निर्यात से 14.4 प्रतिशत कम है। जबकि 2024–25 में, भारत ने 113.45 अरब डॉलर मूल्य का चीनी माल आयात किया, जो पिछले वित्त वर्ष में आयातित 101.73 अरब डॉलर मूल्य के आयात से 11.5 प्रतिशत अधिक है। आंकड़ों से पता चलता है कि चीन से भारत के आयात में दो अंकों की मजबूत वृद्धि दर्ज की गई, जबकि चीन को भारतीय निर्यात में कमी आई, जिससे 99.2 अरब डॉलर का भारी व्यापार घाटा हुआ। इससे कुल द्विपक्षीय व्यापार 138.48 अरब अमेरिकी डॉलर हो गया, जिससे चीन दो साल के अंतराल के बाद भारत के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदार के रूप में अपनी स्थिति पुनः प्राप्त कर सकेगा। यह शोध पत्र भारत और चीन के व्यापारिक संबंधों पर केंद्रित है। जिसमें भारत और चीन के बीच विकसित हो रहे व्यापार संबंधों तथा भविष्य की संभावनाओं का पता लगाने का प्रयास किया गया है।

आलेख सूचना

प्राप्त: 21 अगस्त, 2025 **स्वीकृत:** 12 सितम्बर, 2025 **प्रकाशित:** 30 सितम्बर, 2025

सारणी: 03 **चित्र एवं ग्राफ:** 02 **स्रोत एवं संदर्भ:** 16

मुख्य शब्द: व्यापार घाटा, आर्थिक संबंध, भारत–चीन व्यापार संरचना, द्विपक्षीय संबंध।

प्रस्तावना: आज भारत और चीन के बीच आर्थिक संबंध अभूतपूर्व गति से विकसित हो रहे हैं। 1 अप्रैल, 1950 को भारत, चीन जनवादी गणराज्य के साथ राजनयिक संबंध स्थापित करने वाला पहला गैर–समाजवादी गुट देश बना था। 18 जुलाई, 1994 को भारत और चीन के बीच दोहरे कराधान समझौते पर हस्ताक्षर हुए। दोनों देशों ने विश्व व्यापार संगठन की प्रतिबद्धताओं के अनुसार एक बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली में भाग लेने में भी रुचि दिखाई है। उदारीकरण की प्रक्रिया के बाद दोनों देशों ने उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की है। हालिया महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार है। पिछले छह–सात वर्षों में द्विपक्षीय व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। आज चीन, भारत के शीर्ष तीन व्यापारिक साझेदारों में से एक है, जबकि भारत चीन के शीर्ष दस व्यापारिक साझेदारों में से एक बन गया है। अर्थव्यवस्था के आकार, अर्थव्यवस्था की संरचना, निर्यात और विकास दर को देखते हुए, द्विपक्षीय व्यापार वृद्धि की अपार संभावनाएँ हैं। 1950 में राजनयिक संबंध स्थापित होने के बाद से, चीन और भारत ने सहयोग और प्रतिस्पर्धा

दोनों से युक्त एक जटिल संबंध को आगे बढ़ाया है। जहाँ एक ओर दोनों एशियाई देशों को चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, विशेष रूप से अपनी विवादित हिमालयी सीमा पर, वहीं दूसरी ओर उन्होंने बढ़ते आर्थिक और व्यापारिक संबंधों को भी बढ़ावा दिया है। हाल के वर्षों में उल्लेखनीय प्रगति हुई है, क्योंकि दोनों देश द्विपक्षीय संबंधों के प्रति अपने दृष्टिकोण को पुनर्परिभाषित कर रहे हैं, और वाणिज्यिक सहयोग को बढ़ाते हुए अपनी सीमा को स्थिर करने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। आर्थिक दृष्टि से, चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है, जिसका द्विपक्षीय व्यापार वित्तीय वर्ष 2024–25 में 100 अरब अमेरिकी डॉलर को पार कर जाएगा। चीन भारत को औद्योगिक वस्तुओं, विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी और रसायनों का एक महत्वपूर्ण आपूर्तिकर्ता बना हुआ है। चीनी प्रौद्योगिकी और निवेश की बढ़ती माँग, विशेष रूप से इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) और दूरसंचार जैसे क्षेत्रों में, दोनों देशों के बीच गहरे आर्थिक संबंधों को उजागर करती है। साथ ही, भारत प्रमुख उद्योगों में नए संयुक्त उद्यमों के माध्यम से स्थानीय विनिर्माण स्थापित करने के लिए चीनी कंपनियों को सक्रिय रूप से आकर्षित करने का प्रयास कर रहा है।

अध्ययन का उद्देश्यः निर्यात और आयात जैसे आर्थिक संकेतकों की सहायता से भारत–चीन द्विपक्षीय व्यापार संबंधों का अध्ययन और विश्लेषण करना।

शोध विधिः यह शोध मुख्यतः द्वितीयक आकड़ों पर आधारित है। द्वितीयक आकड़ों को मुख्यतः विभिन्न प्रासंगिक शोध पत्र एवं पत्रिकाओं, आर्थिक समीक्षा, विश्व बैंक, विश्व व्यापार संगठन के प्रकाशन और भारत सरकार के वाणिज्य मंत्रालय से लिया गया है। भारत और चीन के मध्य व्यापारिक संबंधों का अध्ययन करने के लिए विभिन्न समाचार पत्रों और वेबसाइटों में प्रकाशित सूचनाओं का उपयोग किया गया है।

भारत–चीन के मध्य व्यापारः भारत और चीन प्राचीनतम सभ्यताओं में से हैं और इनके बीच संबंधों का इतिहास बहुत पुराना है। नाथूला दर्रा प्रसिद्ध रेशम मार्ग था। बीसवीं सदी के आरंभ में भारत और चीन के बीच कुल सीमा व्यापार का अस्सी प्रतिशत नाथूला दर्रे से होकर होता था। भारत के निरंतर बुनियादी ढाँचे के विकास, उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स की माँग और नवीकरणीय ऊर्जा के प्रोत्साहन ने चीनी मशीनरी, कलपुर्जों और मध्यवर्ती वस्तुओं के आयात को बढ़ावा देना जारी रखा है। मूल्य–प्रतिस्पर्धी विनिर्माण में चीन की मजबूती ने इसे इनपुट्स, विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक्स और हरित प्रौद्योगिकी के लिए एक विश्वसनीय स्रोत बना दिया है। वैश्विक प्रतिकूलताओं के बीच भारतीय निर्यात में नरम भारत से चीन के आयात में गिरावट कच्चे माल, खनिज और रसायन जैसे क्षेत्रों में व्यापक वैश्विक मांग दबाव को दर्शाती है, जो भारत की पारंपरिक निर्यात शक्तियाँ हैं। भारत में घरेलू नीतिगत बदलावों, जिनमें कुछ क्षेत्रों में बढ़ते संरक्षणवाद भी शामिल है, ने भी आयात के मामले में द्विपक्षीय व्यापार की गति को कम किया है। विश्लेषकों को चीन–भारत आर्थिक संबंधों में ''आंशिक रूप से नरमी'' दिखाई दे रही है, और विशिष्ट क्षेत्रों में सहयोग धीरे–धीरे फिर से शुरू हो रहा है। भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार अच्छी दर से बढ़ रहा है, लेकिन व्यापार घाटा अभी भी चीन के पक्ष में झुका हुआ है।

चीन के साथ भारत का व्यापार वित्त वर्ष 2014–15 के 48.45 अरब डॉलर से बढ़कर वित्त वर्ष 2024–25 में 99.21 अरब डॉलर हो गया। इस अवधि के दौरान, चीन को भारत का निर्यात 11.96 अरब डॉलर से बढ़कर 14.25 अरब डॉलर हो गया, जबकि चीन से आयात 60.41 अरब डॉलर से बढ़कर 113.46 अरब डॉलर हो गया, जो एक उल्लेखनीय वृद्धि है जिसने व्यापार असंतुलन को और गहरा कर दिया। यह वृद्धि इलेक्ट्रॉनिक्स और मशीनरी जैसे चीनी सामानों पर निरंतर निर्भरता के साथ–साथ भारत के सीमित निर्यात को भी दर्शाती है। जैसा कि सारणी 1 स्पष्ट है।

सारणी–1: भारत–चीन के मध्य द्विपक्षीय व्यापार (बिलियन अमेरिकी डॉलर में)

वर्ष (वित्तीय वर्ष)	चीन को भारत का निर्यात	प्रतिशत परिवर्तन	चीन से भारत का आयात	प्रतिशत परिवर्तन	व्यापार घाटा	कुल व्यापार
2014-2015	11.96	-19.57	60.41	18.38	48.45	72.37
2015-2016	9.01	-24.61	61.71	2.14	52.70	70.72
2016-2017	10.17	12.84	61.28	-0.69	51.11	71.45
2017-2018	13.33	31.08	76.38	24.64	63.05	89.71
2018-2019	16.75	25.64	70.32	-7.94	53.57	87.07
2019-2020	16.61	-0.83	65.26	-7.19	48.65	81.87
2020-2021	21.19	27.54	65.21	-0.07	44.02	86.40
2021-2022	21.56	0.34	94.57	45.02	73.01	116.13
2022-2023	15.31	-28.00	98.51	4.16	83.20	113.82

2023-2024	16.66	8.84	101.74	3.28	85.08	118.40
2024-2025	14.25	-14.45	113.45	11.52	99.21	127.71

(**स्रोतः** वाणिज्य विभाग, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)

चित्र–1: भारत–चीन के मध्य द्विपक्षीय व्यापार (बिलियन अमेरिकी डॉलर में)

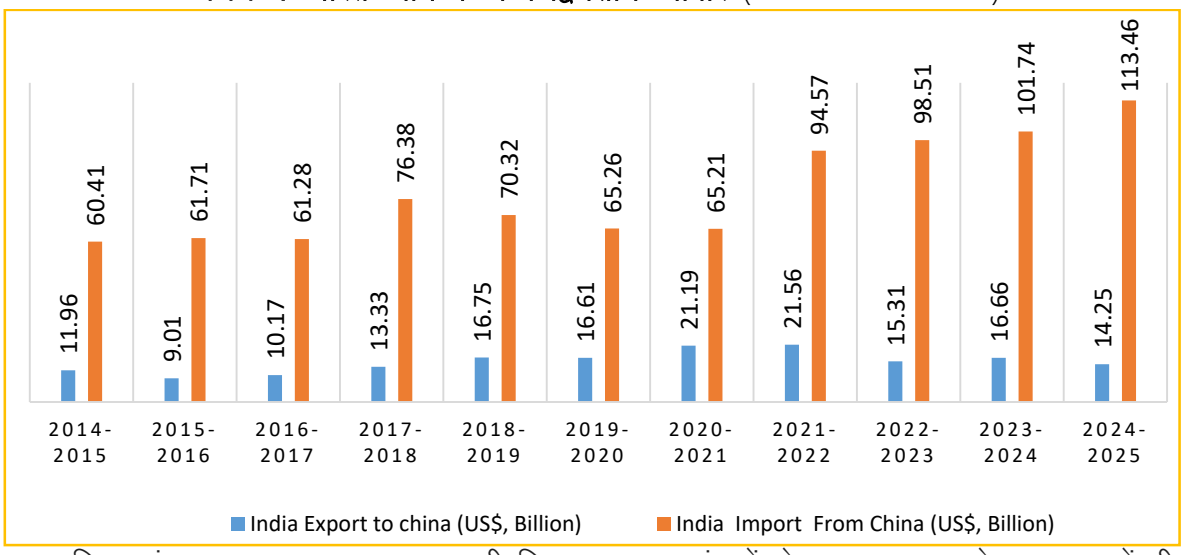

वाणिज्य मंत्रालय भारत सरकार द्वारा जारी विस्तृत व्यापार आंकड़ों के अनुसार, भारत ने 2024–25 में चीन को 14.25 अरब डॉलर मूल्य का माल निर्यात किया, जो पिछले वित्त वर्ष (2023–24) के 16.66 अरब डॉलर मूल्य के निर्यात से 14.4 प्रतिशत कम है। 2024–25 में, भारत ने 113.45 अरब डॉलर मूल्य का चीनी माल आयात किया, जो पिछले वित्त वर्ष में आयातित 101.73 अरब डॉलर मूल्य के आयात से 11.5 प्रतिशत अधिक है। आंकड़ों से पता चलता है कि चीन से भारत के आयात में दो अंकों की मजबूत वृद्धि दर्ज की गई, जबकि चीन को भारतीय निर्यात में कमी आई, जिससे 99.2 अरब डॉलर का भारी व्यापार घाटा हुआ। जैसा कि सारणी–1 से स्पष्ट हो रहा है। 2014–15 में भारत का चीन से आयात 60.41 अरब डालर मूल्य से बढकर 2024–25 में यह 113.73 अरब डालर हो गया, वहीं पर भारत का चीन को निर्यात जो 2014–15 11.96 अरब डालर मूल्य था, जो 2015–16 में गिरकर 9.01 अरब डालर रह गया। यद्यपि 2015–16 से 2021–22 तक भारत के निर्यात में उतरोतर बृद्धि देखने को मिलती है और यह 2021–22 में बढकर 21.56 अरब डालर मूल्य हो गया। 2021–22 के बाद भारत के कुल निर्यातों में लगातार गिरावट र्दज की जा रही है। 2024–2025 में भारत का चीन को कुल निर्यात कम होकर 14.25 अरब डालर मूल्य का रह गया।

भारत से निर्यातः पिछले पॉच वर्षो में चीन को भारत के मुख्य निर्यात में जैविक रसायन, खनिज ईंधन, अयस्क, कपास और तांबा शामिल थे। चीन को भारत के शीर्ष दस निर्यात वस्तुएँ चीन को कुल निर्यात का 73 प्रतिशत हिस्सा हैं। इसमें सबसे अधिक हिस्सा कपास (HS 52) का है, जो 14.2 प्रतिशत है, इसके बाद अयस्क, स्लैग और राख (HS 26) का 13.1 प्रतिशत और कार्बनिक रसायन (HS 29) का 8.8 प्रतिशत हिस्सा है। चीन से शीर्ष दस उत्पादों के आयात में वृद्धि के विपरीत, 2011–16 के दौरान चीन को भारत के शीर्ष दस वस्तुओं के निर्यात की वृद्धि दर में भारी गिरावट आई।

चीन से शीर्ष दस उत्पादों के आयात में वृद्धि के विपरीत, पिछले पॉच वर्षो (2020–2024) के दौरान चीन को भारत के शीर्ष दस वस्तुओं के निर्यात की वृद्धि दर में भारी गिरावट आई, जिन निर्यात योग्य उत्पादों में सबसे अधिक गिरावट देखी गई, उनमें अयस्क, स्लैग और राख में –6 प्रतिशत की गिरावट आयी जो कुल निर्यातों का 85 प्रतिशत है। उसके बाद आर्गेनिक रसायन में–18 प्रतिशत की गिरावट, प्लास्टिक उत्पाद और खनिज ईंधन में –4 प्रतिशत और तैयार पंख या पंख से बनी वस्तुएँ, कृत्रिम फूल, वस्तुएँ के निर्यात में –14 प्रतिशत की गिरावट आयी। इसी अवधि के दौरान चीन को निर्यात किए जाने वाले शीर्ष दस उत्पादों में परमाणु रिएक्टर, बॉयलर, मशीनरी और यांत्रिक उपकरण उनके पुर्जे के निर्यातों 9 प्रतिशत, मछली और क्रस्टेशियन, मोलस्क और अन्य जलीय अकशेरुकी के निर्यात में 7 प्रतिशत की जोकि कुल निर्यातों का 18 प्रतिशत है, पशु, वनस्पति या सूक्ष्मजीवी वसा तेल और उनके विखंडन से तैयार खाद्य वसा के निर्यात में 5 प्रतिशत जो कुल निर्यातों का 18 प्रतिशत है और नमक, गंधक, मिट्टी और पत्थर, पलस्तर सामग्री, चूना और सीमेंट के निर्यातों में 7 प्रतिशत जो कुल निर्यातों का 43 प्रतिशत है के निर्यातों में सकारात्मक वृद्धि

देखी गई। वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, हाल के वर्षों में चीन को भारत के निर्यात में लगातार गिरावट आ रही है। वित्त वर्ष 2024–25 में, चीन को भारत का निर्यात 14.25 अरब डॉलर था, जो 2023–24 में 16.66 अरब डॉलर से कम है। भारत द्वारा चीन को निर्यात की जाने वाली प्रमुख वस्तुओं में कार्बनिक रसायन, सूती धागा, तांबा और अयस्क शामिल हैं। हालाँकि, चीन को भारत का निर्यात अभी भी चीन से उसके आयात की तुलना में बहुत कम है, जिसके परिणामस्वरूप व्यापार घाटा बहुत अधिक है।

सारणी–2: भारत से चीन को निर्यात किए जाने वाले मुख्य उत्पाद–2024–25

S.N.	Product label	India's Exports from China (USD Billion)						
		2020	2021	2022	2023	2024	Annual growth in value between 2020-2024, %, p.a.	Share in India's exports, %
1	Ores, slag and ash.	3.49	3.48	1.07	3.42	2.56	-6	85
2	Organic chemicals.	2.41	2.52	1.63	1.22	1.26	-18	6
3	Mineral fuels, mineral oils and products of their distillation.	1.20	1.74	1,98	1,18	1,22	-4	2
4	Nuclear reactors, boilers, machinery.	0.71	1.03	0.99	0.94	1,13	9	3
5	Fish and crustaceans, molluscs and other aquatic invertebrates.	0.89	1.02	1.26	1.24	1.13	7	18
6	Animal, vegetable or microbial fats and oils.	0.67	0.71	0.65	0.72	0.85	5	43
7	Electrical machinery and equipment and parts thereof.	0.63	0.98	0.63	0.67	0.82	1	2
8	Salt; sulphur; earths and stone	0.63	0.78	0.98	0.90	0.81	7	40
9	Coffee, tea, maté and spices	0.60	0.66	0.46	0.64	0.68	2	13
10	Prepared feathers and down and articles made of feathers or of down;	0.23	0.50	0.38	0.46	0.47	-14	80
11	Total Export from China.	19.00	23.03	15.08	16.23	15.13	……	100

Source: ITC Trade Map Database

भारत का चीन से आयातः आयात के मामले में, चीन से भारत के आयात में विद्युत और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का प्रभुत्व रहा, उसके बाद मशीनरी और परमाणु रिएक्टरों का स्थान रहा। कार्बनिक रसायन, प्लास्टिक, ऑप्टिकल, फोटो, तकनीकी और चिकित्सा उपकरण भी प्रमुखता से आयात किए गए। जैसाकि सारणी–03 से स्पष्ट है।

सारणी–3: चीन से भारत में आयातित मुख्य उत्पाद, 2020 से 2024 तक

S.N.	Product label	India's imports from China (USD Billion)					Annual growth in value between 2020-2024, %, p.a.	Share in India's imports, %
		2020	2021	2022	2023	2024		
1	Electrical machinery and equipment and parts thereof.	17.84	26.39	30.6	29.3	36.2	14	42
2	Nuclear reactors, boilers, machinery	12.37	18.79	21.7	21.9	24.8	18	41
3	Organic chemicals	8.19	11.86	13.5	11.8	11.1	06	43
4	Plastics and articles thereof	2.16	0.41	1.98	2.36	2.72	27	28
5	Optical, photographic, cinematographic,	0.83	1.17	2.20	2.35	2.51	15	21
6	Iron and steel	1.57	2.43	1.89	1.91	2.09	36	15
7	Vehicles other than railway or	1.23	1.62	1.80	1.78	1.99	17	28

	tramway rolling stock,							
8	Articles of iron or steel	1.20	1.72	1.37	1.40	1.84	13	40
9	Aluminium and articles thereof	0.67	0.97	1.37	1.40	1.84	27	24
10	Miscellaneous chemical products	1.24	1.70	1.70	1.51	1.52	02	21
11	Total Imports from China.	58.7	87.5	102.	99.6	108.9	14	100
Source: ITC Trade Map Database								

चीन से भारत के शीर्ष दस आयात, चीन से होने वाले कुल आयात का 79 प्रतिशत हिस्सा हैं। इसमें से अधिकांश हिस्सा विद्युत उपकरणों का है, जो 42 प्रतिशत है। इसके बाद परमाणु रिएक्टर, बॉयलर, मशीनरी और यांत्रिक उपकरणय उनके पुर्जे 18 प्रतिशत, कार्बनिक रसायन में 6 प्रतिशत, प्लास्टिक और उनकी वस्तुओं में 27 प्रतिशत, ऑप्टिकल, फोटोग्राफिक, सिनेमैटोग्राफिक, मापन, जाँच, परिशुद्धता, चिकित्सा या शल्य चिकित्सा में 15 प्रतिशत, लोहा और इस्पात में सर्वाधिक 36 प्रतिशत, रेलवे या ट्रामवे रोलिंग स्टॉक के अलावा अन्य वाहन एवं उनके पुर्जे और सहायक उपकरण में 17 प्रतिशत, लोहे या इस्पात की वस्तुओं में 13 प्रतिशत, एल्युमीनियम और उनकी वस्तुओं में 27 प्रतिशत और विविध रासायनिक उत्पाद। दिलचस्प बात यह है कि चीन से आयातित शीर्ष दस उत्पादों में 2020–2024 के दौरान 14 प्रतिशत की सकारात्मक वृद्धि देखी गई, जबकि शेष उत्पादों में इसी अवधि के दौरान–6. 1 प्रतिशत की गिरावट देखी गई।

चीन में मंदी और आपूर्ति में व्यवधान के बावजूद भारत के कुल आयात में चीन की हिस्सेदारी कम नहीं हुई है, और 2020–24 में चीन से भारत का आयात कोविड–पूर्व स्तर से काफी अधिक है। भारत के आयात में चीन की हिस्सेदारी 16.6 प्रतिशत जो 2024–25 में गिरकर 15.43 प्रतिशत हो गयी, जबकि संयुक्त अरब अमीरात भारत के लिए आयात का दूसरा सबसे बड़ा स्रोत था, जिसकी आयात हिस्सेदारी क्रमशः 2020–21 और 2024–25 में 6.7 प्रतिशत और 7.31 प्रतिशत थी। कुल गैर–तेल माल आयात में चीन का प्रभुत्व है, क्योंकि गैर–तेल आयात के लिए भारत की चीन पर निर्भरता 25 प्रतिशत या उससे अधिक हो सकती।

भारत और चीन के मध्य व्यापार घाटा: भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार अच्छी दर से बढ़ रहा है, लेकिन व्यापार घाटा अभी भी भरत के पक्ष में झुका हुआ है। चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा पिछले कुछ वर्षों में लगातार बढ़ रहा है और सभी हितधारकों के लिए चिंता का एक प्रमुख कारण है। भारत ने बार–बार बढ़ते व्यापार घाटे और चीनी बाजार में भारतीय वस्तुओं के सामने आने वाली गैर–व्यापारिक बाधाओं पर अपनी चिंता व्यक्त की है। 2003–04 के 1.1 अरब अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2024–25 में 99.2 अरब अमेरिकी डॉलर हो गया। पिछले वित्त वर्ष में भारत के कुल व्यापार असंतुलन (283 अरब अमेरिकी डॉलर) में चीन का व्यापार घाटा लगभग 35 फीसदी था। 2023–24 में यह अंतर 85.1 अरब अमेरिकी डॉलर था। व्यापार घाटे आंकड़ा न सिर्फ बड़ा है, बल्कि स्ट्रक्चरल भी है। थिंक टैंक जीटीआरआई के अनुसार, इसे और भी गंभीर बनाने वाली बात यह है कि चीन अब लगभग हर औद्योगिक कैटेगरी में भारत के आयात पर हावी है: फार्मास्यूटिकल्स और इलेक्ट्रॉनिक्स से लेकर कंस्ट्रक्शन मैटेरियल्स, रिन्यूएबल एनर्जी और कंज्यूमर गुड्स तक।

हालांकि, वाणिज्य मंत्रालय के अनुसार, चीन से आयातित अधिकांश वस्तुएं कच्चे माल, इंटरमिडिएट प्रोडक्ट्स और कैपिटल गुड्स जैसे ऑटो कंपोनेंट, इलेक्ट्रॉनिक पार्ट्स, मोबाइल फोन पार्ट्स, मशीनरी और एक्टिव फार्मा सामग्री हैं, इनका उपयोग तैयार उत्पाद बनाने में किया जाता है, जिनका निर्यात भी किया जाता है। बढ़ते व्यापार घाटे का क्या प्रभाव होगा? विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव, बाहरी आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भरता, सस्ता आयात स्थानीय मैन्युफैक्चरर को नुकसान पहुंचा सकता है. मुद्रा अवमूल्यन के कारण आयातित वस्तुओं की लागत बढ़ सकती है, जिससे महंगाई दर बढ़ सकती है और आयात पर अधिक निर्भरता प्रमुख क्षेत्रों में घरेलू क्षमता निर्माण के प्रोत्साहन को कम करती है, जिससे लॉन्ग टर्म औद्योगिक ग्रोथ धीमा हो जाता है। चीन पर भारी आयात निर्भरता का अर्थ सरकार के दृष्टिकोण से, जब सरकार किसी अमित्र देश से उत्पादों और सेवाओं के आयात पर निर्भर होती है, तो राजनीतिक और सुरक्षा चुनौतियाँ भी गहरी हो जाती हैं। भारत अपने दवा उद्योग में इस्तेमाल होने वाले अधिकांश सक्रिय दवा सामग्री (एपीआई) चीन से आयात करता है। जैसा कि सारणी–03 से स्पष्ट हो रहा है। जहॉ निर्यात 2014–15 में 19.15 प्रतिशत बढ़कर 11.96 अरब डॉलर से 2024–25 में 14.25 अरब डॉलर हो गया, वही पर कुल आयात 2014–15 में 87. 82 प्रतिशत बढ़कर 60.41 अरब डॉलर से 2024–25 113.46 अरब डॉलर हो गया, जिससे व्यापार घाटा 104.76 प्रतिशत बढ़कर 2014–15 में 48.45 बिलियन डॉलर से बढकर 2024–25 में 99.21 बिलियन डॉलर हो गया, जो एक उल्लेखनीय वृद्धि है जिसने व्यापार असंतुलन को और बढा दिया। यह वृद्धि इलेक्ट्रॉनिक्स और मशीनरी जैसे चीनी सामानों पर निरंतर निर्भरता के साथ–साथ भारत के सीमित निर्यात को भी दर्शाती है।

चित्र–2: भारत का चीन और शेष विश्व के साथ व्यापार घाटा (बिलियन अमेरिकी डॉलर)

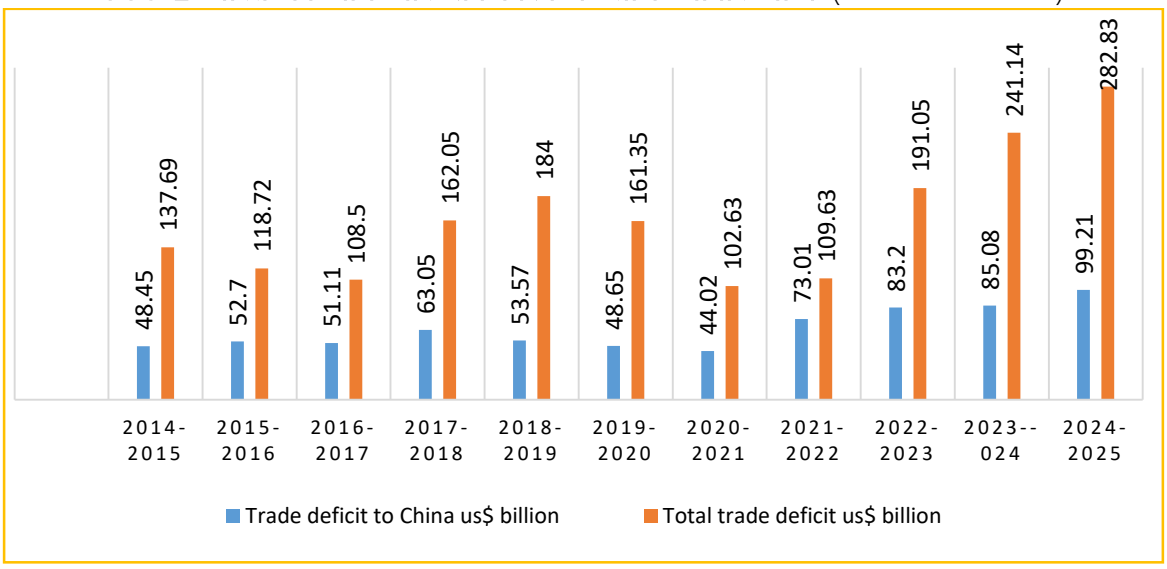

(**स्रोतः** वाणिज्य विभाग, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)

भारतीय बाजार में भी चीनी एपीआई की कीमत भारतीय एपीआई से सस्ती है। इस समस्या की गहराई कोविड–19 महामारी के दौरान तब उजागर हुई जब यात्रा प्रतिबंधों के कारण भारत को चीनी एपीआई का निर्यात अस्थायी रूप से प्रतिबंधित हो गया और परिणामस्वरूप भारत को भी एपीआई के अपने निर्यात में कटौती करनी पड़ी। भारत में उत्पादित लगभग 24 प्रतिशत कोयला ऊर्जा उन संयंत्रों से आ रही है, जो चीन से आयातित महत्वपूर्ण उपकरणों का उपयोग कर रहे हैं। इसलिए, इसे आवश्यक रूप से रणनीतिक निर्भरता नहीं माना जा सकता है, लेकिन यह निश्चित रूप से एक सुरक्षा चुनौती है। हालाँकि, चीन से ऐसे आयातों को सीमित करने या यहाँ तक कि अवरुद्ध करने की माँग की जा रही है, लेकिन इसका सीधा सा मतलब होगा कि निजी भारतीय बिजली कंपनियों को अधिक लागत वहन करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। भारत और चीन के बीच व्यापार असंतुलन के लिए अनेक कारक जिम्मेदार है। चीन दुनिया के लिए एक विनिर्माण केंद्र बन गया है, जिसका विशाल औद्योगिक आधार उसे भारत की तुलना में कम लागत पर वस्तुओं का उत्पादन करने में सक्षम बनाता है। इसके कारण चीन भारत को इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं से लेकर वस्त्रों तक कई प्रकार के उत्पादों का निर्यात करता है।

चीनी वस्तुओं पर भारत की निर्भरताः भारत चीनी वस्तुओं पर बहुत अधिक निर्भर है, क्योंकि वह चीन से बड़ी मात्रा में कच्चा माल और तैयार उत्पाद आयात करता है। इसमें मशीनरी, इलेक्ट्रॉनिक्स और रसायन जैसी वस्तुएँ शामिल हैं। भारत और चीन के बीच व्यापार में कई गैर–शुल्क बाधाएँ हैं, जिनमें जटिल नियामक आवश्यकताएँ, बौद्धिक संपदा अधिकारों का उल्लंघन और व्यावसायिक लेन–देन में पारदर्शिता का अभाव शामिल है। ये बाधाएँ भारतीय व्यवसायों के लिए चीनी बाजार तक पहुँचना और चीनी फर्मों के साथ प्रतिस्पर्धा करना मुश्किल बना सकती हैं। भारत के अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे और रसद सुविधाओं के परिणामस्वरूप निर्यातकों के लिए लेनदेन लागत बढ़ जाती है, जिससे चीनी बाजार में भारतीय वस्तुएँ कम प्रतिस्पर्धी हो जाती हैं। भारतीय रुपये और चीनी युआन के बीच विनिमय दर भी व्यापार असंतुलन में एक भूमिका निभाती है। भारतीय रुपया चीनी युआन से कमजोर रहा है, जिससे चीनी खरीदारों के लिए भारतीय निर्यात महँगा और भारतीय खरीदारों के लिए चीनी आयात सस्ता हो गया है। इससे दोनों देशों के बीच व्यापार असंतुलन बढ़ गया है। अतः भारत को वियतनाम, दक्षिण कोरिया, जापान, ताइवान और इंडोनेशिया जैसे देशों से अपने आयात में विविधता लाकर चीनी आयात पर अपनी निर्भरता कम करनी होगी।

भारत, चीन को अपने निर्यात बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित कर सकता है। भारत को इंजीनियरिंग सामान, इलेक्ट्रॉनिक्स, दवाइयाँ और रसायन जैसे उच्च मूल्य वाले उत्पादों के निर्यात पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इन उत्पादों का लाभ मार्जिन अधिक होता है और ये भारत की विदेशी मुद्रा आय बढ़ाने में मदद करेंगे। भारत को आयात पर अपनी निर्भरता कम करने के लिए अपने घरेलू उद्योगों का विकास करने की आवश्यकता है। सरकार घरेलू कंपनियों को वर्तमान में आयातित वस्तुओं के निर्माण के लिए प्रोत्साहन प्रदान कर सकती है। इससे न केवल व्यापार असंतुलन को कम करने में मदद मिलेगी, बल्कि भारत में रोजगार के अवसर भी पैदा होंगे। भारत को अन्य देशों के साथ अपने मुक्त व्यापार समझौतों की समीक्षा करनी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि ये घरेलू उद्योगों को

नुकसान न पहुँचाएँ। भारत को निर्यात बढ़ाने और व्यापार घाटे को कम करने के लिए चीन के साथ मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर करने पर भी विचार करना चाहिए।

निष्कर्ष एंव सुझावः हाल के वर्षो में चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार रहा है। यद्यपि चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा पिछले कुछ वर्षों में लगातार बढ़ रहा है और सभी हितधारकों के लिए चिंता का एक प्रमुख कारण है। फिर भी दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंध समकालीन वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में सबसे महत्वपूर्ण द्विपक्षीय संबंधों में से एक है। चीन के साथ निरंतर व्यापार असंतुलन पिछले कुछ समय से भारत के लिए नीतिगत और राजनीतिक दोनों ही मोर्चों पर एक बड़ा मुद्दा रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है, लेकिन चीन के साथ यह व्यापार असंतुलन रास्ते में बड़ी समस्याएँ पैदा कर सकता है। इसलिए आयात पर भारी निर्भरता वाले क्षेत्रों पर विशेष ध्यान केंद्रित करना होगा। ''भारत को अनुसंधान एवं विकास के साथ–साथ उन उद्योगों में विनिर्माण प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने की जरूरत है, जहाँ हमारी आयात पर निर्भरता ज्यादा है, जैसे नवीकरणीय ऊर्जा तकनीकें, इलेक्ट्रॉनिक्स, दूरसंचार, प्लास्टिक और रसायन आदि। हमें नवाचार के लिए अधिक बजटीय आवंटन और प्रोत्साहनों के जरिए स्थानीय उत्पादन को प्रोत्साहित करके विनिर्माण में मूल्य श्रृंखला को आगे बढ़ाना होगा और विनिर्माण के सेवाकरण को भी बढ़ावा देना होगा। इन सभी से उत्पादन लागत और आयात पर निर्भरता कम करने में मदद मिलेगी।'' यद्यपि भारत सरकार ने 2020 में उत्पादन–लिंक्ड प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना के माध्यम से स्थानीय विनिर्माण को एक पहल के रूप में प्रोत्साहित किया था। इसमें आगे जोड़ते हुए, सबनवीस ने कहा कि चीन पर भारत की आयात निर्भरता कम हो सकती है, लेकिन यह धीरे–धीरे और अप्रत्यक्ष रूप से होगा।

स्रोत एवं संदर्भ :

1. आचार्य, अलका. चीन और भारतः वृद्धिशील जुड़ाव की राजनीति, हर आनंद प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008.
2. आचार्य शंकर. भारत में समष्टि आर्थिक नीति और विकास पर निबंध, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2006.
3. अदेल दलजीत सेन. चीन और उसके पड़ोसी, (डीप एंड डीप प्रकाशन, नई दिल्ली), 1984.
4. अहुलवालिया, इशर जज, भारत के आर्थिक सुधार और विकासः मनमोहन सिंह पर निबंध, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 1998.
5. अजीज, जहांगीर, स्टीवन विंसेंट डुनावे, और ईश्वर प्रसाद, चीन और भारत एक दूसरे से सीखते हुएः सतत विकास के लिए सुधार और नीतियां, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, वाशिंगटन डी.सी., 2006
6. बैचमैन डेविड. चीन में नौकरशाही, अर्थव्यवस्था और नेतृत्वः महान छलांग के संस्थागत मूल, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क, 1991।
7. बागची अमिया के. अविकसितता की राजनीतिक अर्थव्यवस्था, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन, 1982।
8. बैन, मॉरिस, आधुनिक चीन में राज्य उद्यम प्रणाली का निर्माणः संस्थागत परिवर्तन की गतिशीलता, एमएः हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, 2005।
9. बाजपेयी जी.एस. सिक्किम पर चीन की छायाः धमकी की राजनीति, लांसर पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1999।
10. बाजपेयी, कांति और मट्टू, अमिताभ, संपादक, द पीकॉक एंड द ड्रैगनः 21वीं सदी में भारत–चीन संबंध, हर–आनंद प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000।
11. बाजपेयी कांति पी, बोनी एल. कोए. भारत और चीन के बीच विश्वास निर्माण, मिशेल में क्रेपॉन और अमित सेवक, सं., दक्षिण एशिया में संकट निवारण, विश्वास निर्माण और सुलह, (मैकमिलन प्रेस, लंदन, 1995।
12. बाजपेयी कांति पी. क्षेत्र, क्षेत्रीय राजनीति और दक्षिण एशिया की सुरक्षा, मार्विन जी. वेनबाम और चेतन कुमार, सं., दक्षिण एशिया सहस्राब्दी की ओर बढ़ रहा हैः राष्ट्रीय सुरक्षा की पुनर्परीक्षा, वेस्ट व्यू, बोल्डर, 1995।
13. कोहेन स्टीफन फिलिप, चीमा परवेज इकबाल, चारी पीआर, दक्षिण एशिया में धारणा, राजनीति और सुरक्षा, राउट लेज कर्जन, लंदन, 2003।
14. दास नारायण. भारत और चीनः एक साझा भाग्य की खोज, मुनि एसडी, सं., अंडरस्टैंडिंग साउथ एशिया, साउथ एशियन पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1994।
15. दीपक बीआर. भारत और चीन 1904–2004ः एक सदी शांति और संघर्ष, मानक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005.
16. देशपांडे जी.पी., आचार्य अलका. सं., सपनों का पुल पार करनाः भारत–चीन के 50 वर्ष, तुलिका प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000

आलेख उद्धरित करें:	कुमार, मुकेश एवं सिंह, पवन कुमार (2025)। भारत-चीन द्विपक्षीय व्यापारिक संबंधों का एक अध्ययन, बुंदेलखंड जर्नल ऑफ अकादमिक रिसर्च (बीजेएआर), वाल्यूम-1, अंक-1, जुलाई-सितंबर 2025, पृष्ठ 29-35।